

परमपिता परमात्मा का दिव्य रूप

-ब्र.कु.जगदीश



दिव । डेवलॉपमेंट कमिश्नर संदीपकुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.गीता साथ में है समाजसेवी निर्मला सोमानी ।



महोवा । ब्र.कु. शैलजा कलेक्टर अनुजकुमार झा को परमात्म समृति चिन्ह देते हुए ।

‘नारीत्व दर्शन’

‘नारीत्व दर्शन’ ब्रह्माकुमारीज का एक ऐसा अनोखा कार्यक्रम, जिसमें नारी के सत्य अस्तित्व, नारी के विभिन्न स्वरूप और उसकी अपार शक्तियों का दर्पण, समाज को दर्शाया गया है। विज्ञान शिक्षा/पीस ऑफ माइंड चैनल पर हर रविवार रात 9.00 से 9.30 व हर रविवार दोपहर 2.00 से 2.30 बजे तक इस कार्यक्रम का प्रसारण किया जा रहा है।

आपकी खुशी आपके साथ



क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है, मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञान के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ “पीस ऑफ माइंड चैनल”, आपके शहर में उपलब्ध है।

Enquiry Mob: 9414151111
18602331035, 83020222022.

सूचना-ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा साफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-

Email- mediabkm@gmail.com

M-8107119445



एक समय था जब प्रायः सभी धर्मों और सभी देशों में परमात्मा को ज्योतिस्वरूप और दीपशिखाकार, मण्डलाकार अथवा बिन्दु रूप माना जाता था। यही कारण है कि आज भी भारत में स्थान-स्थान पर शिवलिंग की स्थापना हुई है और भक्तजन उसकी पूजा करते हैं। परन्तु लोग समयान्तर में यह भूल गए हैं कि शिवलिंग, जो कि किसी अशरीरी का स्मरण-चिन्ह है, वास्तव में ज्योति-बिन्दु परमात्मा की ही पाषाण प्रतिमा है। यदि हम इस्लाम या मुसलमान धर्म की ओर ध्यान दें तो इब्राहिम ने भी मक्का में, काबा में, संगे असबद की स्थापना की थी और आज भी जो मुसलमान यात्री वहां हज करने जाते हैं, वे उस पत्थर को धार्मिक रीति से चूमते हैं और वहां से ही वे काबा की परिक्रमा का आदि और अंत करते हैं। परन्तु आज वे लोग भी इस सत्यता से अनभिज्ञ हैं कि यह परमपिता परमात्मा की ही प्रतिमा है, तभी तो इसे यात्रा में इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सिक्ख धर्म के जो स्थापक, नानक देव जी थे, उन्होंने भी परमात्मा को ज्योति-स्वरूप, अयोनि और अकालमूर्त माना है और उसे ‘ओमकार’ नाम से याद किया है और इधर हम देखते हैं कि शिव के ‘ओमकारेश्वर’ नाम से भी मंदिर हैं और शिव तो है ही अयोनि (अशरीरी) और अकालमूर्त क्योंकि उनका कोई दैहिक रूप ही नहीं जिसे काल खा जाये। ईसाई धर्म के स्थापक ईसा ने भी कहा है कि ‘परमात्मा

एक लाइट है।’

इसी प्रकार हजरत मुसा, जिन्हें यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों धर्मावलम्बी अपना एक पैगम्बर मानते हैं, ने भी पर्वत पर परमात्मा का जो साक्षात्कार किया, उसका एक दीपशिखाकार जैसा ही ज्योतिर्मय रूप था। उसे



उन्होंने ‘जेहोवा’ नाम दिया जो कि ‘शिव’ के नाम से मिलता-जुलता है।

फिर हम देखते हैं कि जापान में आज भी कई बौद्ध लोग

अपने सामने शिवलिंग जैसे आकार वाला एक छोटा-सा पत्थर रखकर उस पर मन एकाग्र करते हैं। वे इसे अपनी भाषा में ‘चिन्कनसेकी’ कहते हैं जिसका अर्थ होता है - शांति का दाता। गोया शांति के दाता का दिव्य रूप ऐसा ही है।

जिन्होंने विश्व के इतिहास कि छानबीन की है, उनका कहना है कि प्राचीन काल में प्रायः सभी देशों में शिव की इसी रूप से पूजा-प्रतिष्ठा होती थी। उदाहरण के तौर पर इतिहासकार कर्नल टॉड ने लिखा है कि यूनान में शिव की इसी प्रकार की प्रतिमा बनाकर यूनानी लोग ‘फ्लुसुस’ नाम से उसकी पूजा करते थे। कर्नल टॉड कहते हैं कि ‘फ्लुसुस’ शब्द संस्कृत के ‘फलेश’ शब्द का अपभ्रंश है जिसका अर्थ होता है - सब फल देने वाला ईश्वर। यहूदी लोग शिव को ‘बेल्लेगो’ नाम से याद करते थे और शिवलिंग को ‘बाल’ कहते थे और आज भी हम देखते हैं कि भारत में शिव के अनेक मंदिर ‘बालेश्वर’ नाम से हैं। मिश्र देश में ‘ओसिरिस’ नाम से इसकी पूजा होती थी और यह शब्द ‘ईश’ शब्द से बना बताते हैं। रोम में शिवलिंग को ‘प्रियपस’ कहते हैं और प्राचीन काल में अरब देशों में इसको ‘लात’ कहा जाता था।

कुछ इतिहासकार कहते हैं कि ‘लात’ शब्द लिंग का वाचक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिव की इसी रूप में पहले प्रायः सारे विश्व में मान्यता रही है।

प्रश्न: मैं टीचर हूँ। हम सेवाओं में बहुत मेहनत करते हैं। सेवा धीरे-धीरे बढ़ती है। हम सेवाओं में अति वृद्धि चाहते हैं। हम विभिन्न विधियों जानना चाहते हैं ताकि हमारी सेवाओं में रौनक आ जाए।

उत्तर: हमारी सेवा वृद्धि तो सभी को प्रभु मिलन कराती है। प्रभु-मिलन हेतु श्रेष्ठ भाव्य व मन की शुद्धि की जरूरत होती है। आजकल मन को शुद्ध करना लोगों के लिए बड़ा कठिन काम हो गया है। विकारों की वृद्धि, चिन्ताओं व समस्याओं ने मानव मन को अशान्त कर दिया है। इसलिए सेवा तो बढ़ेगी परन्तु प्रत्यक्षता होने पर तो सेवाओं की सुनामी ही आ जायेगी।

सेवा में मुख्य आकर्षण तो निमित्त आत्माएं ही होती हैं। उनकी रुहानियत ही दूसरों की पालना करती है। जैसी जिसकी स्थिति, वैसी ही उसकी सेवा होती है। क्योंकि आने वाले पालना चाहते हैं। जो टीचर उनकी जितनी अच्छी आत्मिक पालना करती है, वह उतनी ही सफल होती है। आने वालों से कुछ भी मांगना रॉयल्टी नहीं रहती।

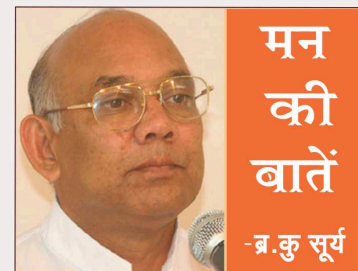
सेवाकेन्द्र का अलौकिक माहौल, पवित्र वातावरण आत्माओं को आकर्षित करता है। कई जगह अपवित्रता ने बनी बनाई सेवा को नष्ट किया है। इस पर भी पूरा ध्यान रहे। याद रहे- 4 घण्टे प्रतिदिन योग के बिना आत्मा में पवित्रता का बल नहीं भरता।

कोर्स देते समय ज्ञान कम दें, अनुभव ज्यादा करायें। जो कुछ जानने वे आये हैं, केवल वही दें। वर्ष में 6 बार, 21 दिन की भट्टी करें। अर्थात् दो मास में एक बार 21 दिन तक एक घण्टा प्रतिदिन योग करें। योग से पूर्व वे स्वमान याद करें - मैं पूर्वज हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ व इष्ट देवी हूँ। योग के बाद देव कुल की आत्माओं का आह्वान करें।

प्रातः व शाम मुरली के बाद सभी को 15-20 मिनट कमेन्ट्री से योग करायें। योग में मिलने वाला सुख उन्हें शिव बाबा की ओर आकर्षित करेगा।

सेवाओं के छोटे-छोटे प्रोग्राम भी करते रहें। ये कार्यक्रम प्रति रविवार को भी किये जा सकते हैं। आने वाले भाई-बहनों के घरों में भी किये जा सकते हैं। इस तरह सेवा बढ़ती जाएगी।

का कहना था कि ये 3 मास ही जियेंगे। वहां की बहनों ने उन्हें पानी चार्ज करके पिलाया और तीन मास में ही कैसर के दोनों मरीज ठीक हो गये। यह आवाज़ चारो ओर फैल गया। धीरे धीरे कई लोग वहां चार्ज पानी लेने आने लगे। बहनें सवेरे 4 बजे ही बाबा के कमरे में जा में पानी रख देती थी, वहां योग चलता था, फिर उसे दृष्टि देकर 21 बार संकल्प करती थी कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। फिर वह पानी सभी को बांटती थी। सब ठीक होने लगे। उससे ही उनकी सेवा बढ गई। सौ भाई-बहनें बाबा के बन गये। यह था पानी पिलाकर सेवा वृद्धि करने का अनुभव।



मन
की
बातें

-ब्र.कु.सूर्य

प्रश्न: योग के प्रयोग का कोई सुन्दर अनुभव हो, हम उसे सुनना चाहेंगे।

उत्तर: उन्नाव उत्तर प्रदेश में एक माता का पति 15 वर्ष से लापता था। उसे योग की विधि बताई और मास्टर सर्वशक्तिवान का प्रतिदिन 108 बार अभ्यास करने को कहा।

उसने प्रतिदिन एक घण्टा योग किया व स्वमान का अभ्यास किया। पति 15 वर्ष बाद घर लौट आया। उसने बताया कि उसे किसी ने बन्धक बना लिया था और अचानक छोड़ दिया। यह था योग की शक्ति का चमत्कार।

प्रश्न: मैं 65 वर्षीय व्यक्ति हूँ। ज्ञान-मार्ग पर 10 वर्ष से चल रहा हूँ। मैं मान-अपमान में समान रहना चाहता हूँ। जब कोई भी मेरा अपमान करता है तो मेरी स्थिति बिगड़ जाती है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: संसार में सबसे कठिन काम है अपमान को सहना। उसमें भी यदि अपने ही लोग, अपने प्रिय जन अपमान करें तो मनुष्य का दिल टूट जाता है। इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि वह किसी से भी मान की कामना न करे। भगवानुवाच याद रखें कि जो आत्माएं स्वमान

में रहती हैं उनका अभिमान नष्ट हो जाता है। अभिमान नष्ट होने से अपमान की फीलिंग भी नष्ट हो जाती है। इसलिए स्वमान के अभ्यास को बढ़ाते चलें।

रोज सवेरे उठकर याद करना कि इस जीवन में मुझे भगवान मिला। मुझे तो भगवान मान दे रहा है, मैं मनुष्यों से मान लेकर क्या करूंगा। मनुष्य तो आज मान देते, कल अपमान करेंगे। भगवान स्वयं मुझे कहते हैं - हे मेरी महान आत्माओं। कितनी ऊँची नजर से हमारे परमपिता हमें देखते हैं।

स्वयं में जब देह-अभिमान ज्यादा होता है तो दूसरों से मान की कामना होती है। अन्दर का खालीपन कामनाओं को जन्म देता है। इसलिए अशरीरी होने का बार-बार अभ्यास बढ़ाते चलें।

हम मान मांगे नहीं, स्वयं को सम्मान के योग्य बनायें। याद रखें जो आत्माएं स्वमान में रहती हैं, सम्मान उनके पीछे परछाई की तरह आता है। परन्तु सम्मान को स्वीकार न करें, उसे प्रभु अर्पण कर दें तो अपमान की भी फीलिंग नहीं होगी।

ज्ञान-चिन्तन के द्वारा स्वयं के अन्दर ज्ञान का बल बढ़ायें। ज्ञान को सुन्दर बातें स्मृति में रहने लगे तो अपमान, अपमान लोंगा ही नहीं, ये बच्चों का खेल लगेगा।

प्रश्न: बाबा कहते हैं, न दुःख दो, न दुःख लो। मेरा पूरा ध्यान रहता है कि मुझसे किसी को दुःख न मिले। परन्तु दूसरों के व्यवहार या बोल से मुझे दुःख होता है। दुःख नहीं लेना चाहती-इसके लिए मैं क्या करूँ?

उत्तर: जो मनुष्य दूसरों को दुःख नहीं देता, उसमें दुःखों को सहने की शक्ति आ जाती है। आपको ये धारणा सुन्दर है। आप इसमें ईश्वरीय आज्ञा का पालन कर रही हैं। जब अपनों से कड़वाहट मिलती है, जब अपने ही अपनों को नहीं समझ पाते तो कष्ट होता है। याद रखना मैं तो मास्टर सुख कर्ता दुःख हर्ता हूँ। मुझे सभी के दुःख हरने हैं, मैं भला दुःखी कैसे हो सकती हूँ।

स्वमान में रहना- मैं पूर्वज हूँ व इष्ट देवी हूँ। जो मुझे कुछ बोलते हैं वे तो अबोध हैं! आप उनकी बातों को सहज रूप से लें तो फीलिंग नहीं आयेगी।

ये कलियुग का अन्त है। यहां सभी तमोप्रधान हैं। चाहे वे अपने हैं या पराये, सभी वासनाओं के वश हैं। इसलिए उनकी बातों को गम्भीरता से नहीं लेना है। हल्के रहो व खुशी में रहो तो दुःख की फीलिंग नहीं आयेगी। contact - Email :- bksurya8@yahoo.com